Aakhir kyun? [Hindi]

Chanchal Gupta

Medical student, Lady Hardinge Medical College, New Delhi

Corresponding Author:
Chanchal Gupta
216/2 Padam Nagar, Kishan Ganj
Delhi-07
Email: arvind dot ashlar at gmail dot com

Received: 18-MAY-2020 Accepted: 22-MAY-2020 Published: 25-MAY-2020

आखिर क्यों ?
क्यूँ एक रोग पड़ रहा है सब पर भारी ?
क्या इतनी ही थी बस हिम्मत हमारी ?
क्यूँ इस लड़ाई में खुद इंसान है बंद ?
क्या लिख रही है प्रकृति एक नया गद्य या खंड ?

क्यूँ आज निहत्था है ये मानव ?
क्यूँ बना कोरोना इस सदी का दानव ?

क्यों इतनी योजनाएं बनाई थी हमने ?
क्यों इतने सपने सजाए थे तुमने ?
क्यों चांद और मंगल बने जरूरी ?
जब अब भी थी यह धरा अधूरी !

क्यों शाहरुख को जाने सारा ये जहान ?
क्यों डॉक्टर को अब भी ना माने भगवान ?

क्यों परमाणु पर सब काम करें ?
जब एक कीटाणु से हैं मरे मिटे ?

क्यों कल के पीछे भागे थे ?
जब वे सब मोह मोह के धागे थे !
क्यों आपस में बस लड़े ये देश ?
क्यों मन में रखे इतने द्वेष ?

Cite this article as: Gupta C. Aakhir kyun? [Hindi]. RHiME. 2020;7:116-7.

क्या मतलब था नए विमानों का ,
उद्धार के उन प्रमाणों का ,
जो कठिन समय में फेल हुए ,
एक नोटिस पर ही रद्द किए ।
था जो समय तू मांगता !
फुर्सत मिले जब रोज की !
अब इस समय को काटने मे
फिर क्यों है तू छटपटा रहा ?

है वक्त यह परिवार का तो क्यों उन्हें ना दे रहा ?
क्यों फोन पर अब भी है तू इतना समय बिता रहा ?

थी गलतियां जो भी तेरी तुझको है अब वो देखती !
उनको ना तू स्वीकारकर क्यों उनको तू बड़ा रहा ?

है तू असल जो इंसान है ,
तू उसी से क्यों परेशान है ?

जो कट रही है जिंदगी क्यों ना खुशी से बिता रहा
है जो सवाल इतने बचे तो क्यों ना तू सुलझा रहा ?

आखिर क्यूँ ये जिंदगी तू रोज़ यूं गवा रहा ?

Acknowledgment: This poem was one of the submissions to "Lockdown Diaries: The COVID Contract" hosted online by Parwaaz, the poetry society of University College of Medical Sciences, University of Delhi, in April 2020